(7) रेखाचित्र :— वस्तु, प्रतिमूर्ति या किसी अन्य साधन के अभाव में अध्यापक कभी-कभी रेखाचित्र का सहारा लेते हैं। रेखाचित्र में अध्यापक द्वारा कुछ रेखाओं के माध्यम से भाव की मूक अभिव्यक्ति है, श्यामपट्ट पर चॉक के सहारे अध्यापक रेखाचित्र खींचकर पाठ को रोचक बना देते हैं। विभिन्न रेखाओं, कोणों एवं घुमावों आदि को श्यामपट्ट पर पढ़ाते समय बनाना स्वाभाविक भी है और सरल भी।

(8) चित्र प्रदर्शक यन्त्र :— कुछ कलाकार अध्यापक स्लाइड बना लेते हैं और अपनी इच्छानुसार तथा आवश्यकतानुसार इन्हें प्रदर्शित करते हैं, पहले मैजिक लैण्टर्न का प्रयोग होता था, इसके बाद पाठ्यपुस्तक के चित्र, पृष्ठ, मानचित्र आदि को बड़े आकार में रजतपट पर प्रदर्शित करने के लिए एपिस्कोप आया, बाद में मैजिक लैण्टर्न और एपिस्कोप दोनों का काम देने वाला एपिडायस्कोप आया, ये हस्तनिर्मित स्लाइड्स कक्षा को सजीवता प्रदान करने में सहायक हैं।

(9) रेडियो :—
आरंभिक समय से इसका प्रचलन रहा है और आज भी कई क्षेत्रों में यह उपयोगी है। विद्यालयों में यदि यह साधन सुलभ है तो इसके कार्यक्रमों की पहले से जानकारी प्राप्त करके भाषा-शिक्षण में इसका उपयोग किया जा

सकता है। भारत के प्रत्येक विद्यालयों में समी विशेषज्ञ या भाषाविद् नहीं जा सकते, भाषा विशेषज्ञ आकाशवाणी द्वारा अपने वक्तव्य प्रसारित करते रहते हैं, विद्यार्थीगण इन वार्ताओं से लाभान्वित हो सकते हैं। रेडियो कार्यक्रमों की ओर अधिक शैक्षिक बनाने की आवश्यकता है।

(10) अभिनय :— विद्यालयों में विशेष रूप से कभी-कभी नाटकों का आयोजन होता है, वार्षिकोत्सव सम्मेलन या किसी विशेष दिन के आयोजन में आगन्तुकों के मनोरंजनार्थ नाटक अभिनीत किये जाते हैं। हिन्दी शिक्षण की दृष्टि से अभिनय महत्वपूर्ण है। अभिनय को देखकर एवं पात्रों के मुख से स्पष्ट एवं उचित आरोह-अवरोह युक्त वाणी को सुनकर विद्यार्थी भाषा का उचित प्रयोग सीखते हैं।

(11) चलचित्र :—

चलचित्र आज मनोरंजन का सर्वप्रथम साधन बन गया है। पश्चिमी देशों में पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करने के लिए चलचित्रों का खूब प्रयोग होने लगा है। साहित्य में वर्णित विभिन्न प्रकार के दृश्यों को वर्णन द्वारा स्पष्ट किया जाता है किन्तु इन दृश्यों को फिल्मों में फोटोग्राफी की कला द्वारा सरलता से प्रदर्शित किया जा

Scanned with CamScanner

सकता है, हालाँकि आज फिल्म सिनेमा के प्रति लोगों की धारणा सकारात्मक नहीं है किन्तु इसमें सुधार कर, महान व्यक्तियों के जीवन से चुनकर अच्छे साधन प्रस्तुत किये जा सकते है।

श्रव्य - दृश्य साधनों का चुनाव

श्रव्य - दृश्य साधनों का चुनाव करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:—

(1) जिस साधन की वास्तविक आवश्यकता हो उसी का प्रयोग हो।

(2) सामग्री बहुत महँगी न हो, साधन- सम्पन्न विद्यालय महँगी सामग्री खरीद सकते है।

(3) वह सुलभ हो, ऐसा न हो की इसका प्रयोग करने के लिए बहुत दूर से छः- सात महीने पहले से योजना करनी पड़े।

(4) कई सामग्रियों का एक साथ चुनाव न किया, एक बार में एक ही साधन चुना जाय।

(5) उपकरण विद्यालय के अपने हो, उधार लेकर इसका प्रयोग करना ठीक नहीं।

(6) अध्यापक उसी साधन को चुने जिसका प्रयोग वह स्वयं जानते हैं।

Scanned with CamScanner